कहानी

समझ का फेर

डॉ प्रेमलता यदु

हॉल में प्रवेश करते ही मेरी सहेली श्रेया, जो मेरे इस घर और शहर में शिफ्ट होने के बाद पहली बार मुझसे मिलने मेरे घर आई थी, अपनी भौंहें चढ़ाती हुई और अपने हाथों की उंगलियों को नचाते हुए बोली –

'पावनी यह क्या...? तुमने ये किन फटीचरो के बीच मकान ले लिया है...?'

मैंने मुस्कुराते हुए कहा –' क्यों क्या हुआ...?'

'अरे मैं अभी तुम्हारे यहां अंदर आ रही थी तो मैंने देखा तुम्हारे बगल वाले पड़ोसी के यहां पॉलिथीन धो कर सुखाए जा रहे हैं, भला यूज़ किया हुआ पॉलिथीन कौन धोकर रियूज करता है यार.' श्रेया ने मुंह बिचकाते हुए कहा.

मैं भी अपने चेहरे पर व्यंग्यात्मकता मुस्कान लाते हुए बोली – 'छोड़ ना हमें क्या करना है, कुछ लोग होते ही ऐसे हैं जन्मजात महा कंजूस...., फिर चाहे उनके पास कितना ही पैसा क्यों ना हो या फिर वो कितने ही अच्छे पोस्ट पर क्यों ना रहे हो, वो रहेंगे कंजूस के कंजूस ही, ऐसे लोग कभी भी अपनी आदत से बाज नहीं आते हैं.'

श्रेया जोर से ठहाके मार कर हंसते हुए सोफे पर बैठ गई और व्यंग्यात्मक लहजे में बोली –' ये तुमने बिल्कुल सही कहा वैसे तुम्हारे ये पैसे वाले पड़ोसी हैं किस पोस्ट पर, जिनके पास पैसा तो है लेकिन फिर भी पांच रूपए में मिलने वाला पॉलिथीन भी धो कर रियूज करते हैं.'

मैं किचन की ओर मुड़ते हुए बोली – ' अरे मुझे ज्यादा कुछ पता नहीं है बस इतना जानती हूं कि जो अकंल जी है वह मौसम विभाग से रिटायर्ड हुए हैं और आंटी जी किसी शासकीय विश्वविद्यालय में भूगोल शास्त्र की प्रोफेसर थी. अब वे दोनों ही रिटायर्ड हैं लेकिन हां यह तो है उनके पास पैसों की कमी नहीं है.'

'ओह....और उनके बच्चे कहां है...?' श्रेया ने दोबारा प्रश्न किया, मैं गैस चूल्हा पर चाय के लिए पतीला चढ़ाते हुए बोली – ' मैंने सुना है आउट ऑफ इंडिया हैं.'

'भाग गए होंगे बेचारे बच्चे, इनकी ये कंजूसी देख कर.'

श्रेया का इतना कहना था कि हम दोनों जोर से हंस पड़े और फिर मैं किचन से ही बोली– 'चाय पियोगी या कॉफी बनाऊं.....?' 'यार मैं दोनों ही नहीं पिऊंगी, तुम एक काम करो हर्बल टी बना लो.' सेंटर टेबल पर रखे हुए मैगज़ीन के पन्नों को पलटते हुए श्रेया बोली.

श्रेया की फरमाइश पर मैं हम दोनों के लिए हर्बल टी बना कर ले आई और टेबल पर रखते हुए बोली –' तुम कब से इतनी हेल्थ कॉन्सेस हो गई हो हर्बल टी पीने लगी हो.'

'अब क्या कहूं यार, तुम्हे तो पता ही है आजकल बाजार में कोई भी चीज़ शुद्ध कहां मिलती है इसलिए मैं बाहर निकलने पर खाने–पीने में थोड़ा सावधानी बरतती हूं वैसे भी स्वास्थ्य की दृष्टि से ब्लैक टी या हर्बल टी ही बेस्ट हैं.'

'सही है पर्यावरण भी तो कितना खराब हो गया है. प्रदूषण भी कितना बढ़ता जा रहा है कि पूछो ही मत, प्रकृति में भी धीरे–धीरे कितने बदलाव आ गए हैं, पहले अक्टूबर–नवम्बर के महीने में गुलाबी ठंड महसूस होने लगती थी लेकिन अब तो समझ ही नहीं आता है कि बारिश है, ठंड? है या फिर गर्मी का मौसम, पूरा का पूरा मौसम चक्र ही बदल गया है.'

मेरे ऐसा कहने पर श्रेया भी प्रकृति के बदलते स्वरूप पर अफसोस जताने लगी. हम बदलते मौसम, प्रकृति और प्रदूषण की बातें कर ही रहे थे कि श्रेया की नजरें मेरे ड्राइंग रूम में टंगे वॉल हैंगिंग पर चली गई, जिसे देखते हुए वह बोली –

' वॉव पावनी वाट ए वंडरफुल आर्ट, यह वॉलहँगिंग कितना खूबसूरत है और एंटीक भी लग रहा है कहां से लिया....?'

' ऑनलाइन मंगवाया है, थोड़ा महंगा पड़ा लेकिन जो भी देखता है इसकी तारीफ जरूर करता है.' मैंने कहा

' वाकई बहुत ही खूबसूरत है.' श्रेया ने कहा, तभी डोर बेल बजा और मैंने जैसे ही दरवाजा खोला सामने बगल वाली आंटी बांस की टोकरी में अमरूद व सीताफल लिए खड़ी थी. उन्हें देखते ही मैं थोड़ा असहज हो गई क्योंकि उनका इस तरह अचानक आने की उम्मीद नहीं थी और दूसरी बात कुछ देर पहले ही हम उनके कंजूस होने का मज़ाक़ बना रहे थे. मैंने अटकते हुए शिष्टाचारवश उनका अभिवादन किया और उन्हें अंदर आने का आग्रह किया और वह आ गई. उनके अंदर आते ही मैंने श्रेया की ओर इशारा करते हुए कहा– 'आंटी जी यह मेरी सहेली श्रेया है.' मेरा ऐसा कहते ही श्रेया ने भी अपना सिर हौले से हिला कर आंटी का अभिवादन किया और आंटी ने भी मुस्कुरा कर अभिवादन स्वीकार किया.

मैं कुछ कहती इससे पहले ही आंटी ने फलों की टोकरी मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा–' यह लो? ताज़े अमरूद और सीताफल हमारे पेड़ के है.'

'थैंक यू आंटी' कहते हुए मैंने आंटी के हाथों से टोकरी ले लिया और उन्हें बैठने को कहा और वह बैठ गई. तभी श्रेया बोली –

आंटी आपने घर पर ही अमरूद और सीताफल के पेड़ क्यों लगा रखे हैं...? इससे तो आपका आंगन बहुत गन्दा हो जाता होगा, जब पेड़ के पत्ते सूख कर गिरते होंगे.....? आप ऑनलाइन एक क्लिक पर जो चाहे वो मंगवा सकती है फिर इतना मेहनत क्यों.....?'

आंटी जी मुस्कुराते हुए बोली– 'बेटा तुम बिल्कुल सही कह रही हो आजकल एक क्लिक पर जो चाहे घर बैठे मंगा सकते हैं लेकिन अपने घर आंगन में यदि स्थान हो और संभव हो तो एक या दो फलदार और छायादार पेड़ अवश्य लगाने चाहिए , इससे पर्यावरण की सुरक्षा होती है और पर्यावरण अच्छा व संतुलित भी रहता है.'

'ओह....तो क्या आप ऑनलाइन कुछ भी नहीं मंगवाती है.' श्रेया ने जानना चाहा .

' नहीं ऐसा नहीं है लेकिन मेरा पहला प्रयास यह रहता है कि मैं पहले स्थानीय बाजार से स्थानीय लोगों से ही सामान खरीदूं , जिससे उनकी आजीविका सुचारू रूप से चलती रहे, उन्हें विस्थापित ना होना पड़े और मुझे शुद्ध, ताज़े फल, सब्जियां और दैनिक जरूरत की चीजें मिलती रहे. यहां पर मैं एक और बात स्पष्ट करना चाहूंगी कि हस्तकला व परंपरागत वस्तुएं भी हम सभी को अपने स्थानीय लोगों से ही खरीदना चाहिए ताकि परंपरागत एवं संग्रहणीय वस्तुएं अपना अस्तित्व ना खोएं.'

जब आंटी यह सब कह रही थी तब मैं और श्रेया उन्हें ध्यान पूर्वक सुन रही थीं. हमें उनकी बातें बिल्कुल सही लग रही थी किन्तु मेरे मन में अब भी एक जिज्ञासा बनी हुई थी कि यह सब तो ठीक है किन्तु आंटी जी इतनी कंजूसी क्यों करती है...! वह पॉलिथीन रियूज क्यों करती है....? मैं पॉलिथीन के रियूज का कारण जानना चाहती थी इसलिए मैंने आंटी से पूछा – ' आंटी जी हम यह तो समझ गए कि हम सभी को अपने पर्यावरण को स्वच्छ व अच्छा बनाए रखने के लिए पेड़, पौधे लगाना चाहिए,स्थानीय विक्रेताओं से हमें इसलिए दूध, फल, सब्जियां और रोजमर्रा के सामान खरीदना चाहिए ताकि उनकी आजीविका चलती रहे और हमें भी शुद्ध व ताज़े सामान मिलते रहे, हमें अपनी क्षेत्रीय कला और संस्कृति को लुप्त होने और पलायन को रोकने के लिए भी स्थानीय बाजार और स्थानीय लोगों से ही सामान खरीदना चाहिए लेकिन मुझे यह समझ नहीं आया कि आप पॉलिथीन कैरी बैग का रियूज क्यों करती है...?'

मेरे ऐसा पूछने पर आंटी थोड़ा संजीदा हो गई, फिर बोली – ' पहला तो यह है कि हमें पॉलिथीन का यूज करना ही नहीं चाहिए, यह हमारे पर्यावरण के लिए बहुत ही घातक है. पॉलिथीन सालों–साल नहीं गलती, जिस वजह से भूमि बंजर और जल स्रोत दूषित होने लगे है. यह हमारे पर्यावरण के लिए नुकसानदायक है लेकिन फिर भी कभी–कभी, किसी ना किसी रास्ते पॉलिथीन घर के भीतर आ ही जाती है, तब मैं पॉलिथीन का तब तक रियूज करती हूं जब तक किया जा सकता है, उसके बाद नगर पालिका के संग्रह बिंदुओं या फिर पॉलिथीन रिसाइक्लिंग संग्रह केन्द्रों पर दे देती हूं. ऐसा करके मुझे लगता है मैंने पर्यावरण को दूषित होने से थोड़ा तो बचाने का प्रयास किया है.'

आंटी की बातें सुनकर उनके विचारों को जानकर मेरे और श्रेया की आंखों में लज्जा और अफसोस के भाव तैर गए थे. हम आंटी का पॉलिथीन धो कर रियूज करना उनकी कंजूसी समझ रहे थे जबकि यह उनका पर्यावरण के प्रति जागरूकता थी. सारी बातें जानने और समझने के पश्चात् मैंने और श्रेया ने अपने आपसे और आंटी से वादा किया कि हम भी अपने समाज,पर्यावरण और आसपास को स्वच्छ व स्वस्थ बनाए रखने के लिए छोटे–छोटे प्रयास करेंगे. यह सुनकर आंटी को बहुत अच्छा लगा और वह घर से निकलते हुए हमसे बोली– 'बच्चों की समस्याएं केवल चिंता जताने या चर्चा करने से हल नहीं होती है बल्कि सार्थक कदम उठाने और प्रयास करने से होती हैं.'

आंटी की कही सारी बातें मेरे और श्रेया के विचारों में कई नए परिवर्तन ले आए थे.

क्लास by बड़े भाई

हार मत मानना एक प्रयास जीतेगा

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, जब बार बार हमारी मेहनत असफल हो जाती है तो हम टूट जाते हैं और इस तरह टूट जाते हैं कि फिर आगे मेहनत से विश्वास सा उठ जाता है.

क्या आपके साथ ऐसा हुआ है तो चलिए आज इसी पर बात करते हैं कि कैसे हम इससे बाहर निकल सकते हैं और गिरकर भी मजबूती से फिर खड़े हो सकते हैं..

छोटे भाई, यह दुनिया अनगिनत कहानियों से भरी है, जिसमें सफलता है , असफलता है, विवशता है, सबकुछ है क्योंकि हम सभी कुछ न कुछ पाने की दौड़ में हैं, इसके लिए आप पूरे मनोयोग से प्रयास करते हैं लेकिन प्रयास भी कई बार आपकी मनचाही जगह नही दिला पाते और हम पूरी तरह टूट जाते हैं. देखिए, यह एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है.

इसे समझने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने इस पर एक शोध भी किया था जिसे पाइक का सिद्धांत कहा जाता है. पाइक एक खतरनाक मछली का नाम है एक बड़े टैंक में पाइक को और उसके शिकार को रखा गया. पाइक जैसे ही अपने शिकार को खाने के लिए बढती है, उस टैंक में उसके मार्ग में एक पारदर्शी कांच का अवरोध रख दिया जाता है जिससे वो अपने शिकार को देख तो सकती थी लेकिन उस तक तक नही पहुँच सकती थी, उसके हजारों प्रयास उस कांच के अवरोध की वजह से असफल हो गये.. उस प्रयास में उसका पूरा मुंह लुह्लुहान हो चुका था..फिर वो पारदर्शी कांच खोल दिया जाता है लेकिन अब दृश्य अलग था, उसके शिकार उसके पास था लेकिन वो किसी को नही खाती.. वो बार बार के प्रयास से पूरी तरह टूट चुकी थी..तो कुछ समझा आपने

छोटे भाई उस मछली कि तरह हम भी टूट जाते हैं कुछ पाने के लिए बार बार प्रयास के असफल होने से.. बार बार असफलता से हम अगले प्रयास में कमजोर पड़ने लगते है.. तो क्या हमारा टूट जाना उचित है, नही क्योंकि हम मछली नही हैं हम इंसान है हममे बुद्धि है..हम सोच समझ सकते हैं.. हमें इससे निकलने के लिए यही समझना होगा कि लक्ष्य बड़ा है तो पहले ही प्रयास में सफलता मिले यह ज़रुरी नही है.. हार मानने से कुछ नही होगा.. अगर थॉमस एंडरसन के हजारों प्रयास असफल हुए थे फिर कहीं एक प्रयास बल्ब बना पाया..वो भी तो हार मान सकते थे...

छोटे भाई , कहना यह है कि पाइक मछली की तरह कभी भी प्रयास से ऊबिये मत यदि कुछ पाने की दृढ इच्छा है तो प्रयास के नए नए तरीके अपनाएं, कुछ भी करें लेकिन हार मत माने क्योंकि यदि कुछ मिलेगा तो वो मिलेगा प्रयास से ही.. प्रयासों को कोसने से कुछ नही होगा..और आप यदि उसी मजबूती से उठ खड़े हुए तो कोई न कोई प्रयास ज़रुर आपको आपके लक्ष्य तक पहुंचा देगा.

मैंने कभी लिखा था

रो मत साथी जीत के राही इसी किनारे आते हैं
संघर्ष कि तपती भट्ठी से, किरदार निखारे जाते है
जिस पट्ठे ने खाई न हो, मिटटी किसी अखाड़े की
क्या जानेगा वो बेचारा, दांव कहाँ से आते हैं.

व्यंग्य

गरीब होने के सोशल मीडिया पर फायदे

रेखा शाह आरबी

आजकल जमाना बदल चुका है हर चीज अपग्रेड हो चुकी है . अब गरीबों को ही ले लीजिए. पहले गरीबी ,दरिद्रता दुख का कारण होती थी . लेकिन आजकल गरीबी भी एक स्टेटस है. पहले लोग अपनी गरीबी सात पर्दों के अंदर छुपा कर रखते थे. की दुनिया को उनकी खस्ता हालत के बारे में पता नहीं चले. लेकिन आजकल ऐसा कुछ भी नहीं है . लोग सोशल मीडिया पर सीना ठोक कर बताते हैं कि मैं बड़ा गरीब हूं . गरीबी इस्तेमाल करने वालों की सोशल मीडिया पर भरमार है. और वह उसका भर भर कर फायदा उठाते हैं. कभी–कभी तो अमीर लोग उनके तकदीर से जलन करने लगते हैं . कि काश हमें भी भगवान ने गरीब बनाया होता.

गरीब होने के भी अपने फायदे हैं. यदि आप अमीर नहीं है .तो निराश मत होइए. आप जब चाहे तब अपनी गरीबी का इस्तेमाल करके अमीर हो सकते हैं. लेकिन अमीर लोग अपनी अमीरी का इस्तेमाल करके गरीब नहीं हो सकते हैं.

गरीब होने के बहुत सारे फायदे हैं . आपकी गरीबी ही आपको अमीर बना सकती है. गरीबों को हल्के में मत लीजिए.राजनीति में गरीबी का इस्तेमाल करके सरकार बन जाया करता है. सोशल मीडिया पर भी अपनी गरीबी का इस्तेमाल करके लोग करोड़पति बन चुके हैं और लगातार बन रहे हैं.

इसलिए यदि आप गरीब हैं तो सोशल मीडिया पर गर्व से कहिए कि मैं गरीब हूं. क्योंकि सोशल मीडिया ने साबित कर दिया है कि असली मजा तो गरीबी में है . सारी सहानुभूति और सारा प्यार दुलार तो बस गरीबों को मिलता है. अमीर तो सोशल मीडिया पर इस मामले में बेहद गरीब है. अमीर लोगों को सोशल मीडिया पर कोई घास नहीं डालता है. बल्कि लोग उनसे चिढ़ते हैं.अमीरी में तो बस टेंशन है टैक्स का ,टोल का ,ट्रेंड का और अपनी इज्जत बचाने का.

गरीब आदमी के पास यह सारे दुख नहीं कि उसे सरकार को टैक्स भरना है . इसलिए आपको अपनी गरीबी छुपाने की कोई जरूरत नहीं है . टैक्स देने के लिए मिडिल क्लास और अमीर बैठे हैं गरीब तो बस इंजॉय कीजिए.

एक चीज और देखने में बहुत ज्यादा मात्रा में आ रही है . पहले लोग दिखावटी अमीर बनते थे. अब गरीबी का इतना ट्रेंड है कि लोग दिखावटी गरीब ज्यादातर बनते हैं. असली गरीब तो अभी भी दुख में है. और दुख काट रहा है. और जितने सोशल मीडिया पर गरीब –गरीब चिल्लाते हैं यह सब दिखावटी गरीब है. तो अपनी भावनाएं जरा संभल कर उनके ऊपर लूटाए .

अमीर लोग सुबह की चाय भी यदि सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हैं . तो ऐसे पोस्ट करते हैं जैसे वह चाय नहीं किसी विदेशी कंपनी का आईपीओ लॉन्च कर रहे हैं. जबकि गरीब को ऐसे चोंचले की जरूरत नहीं पड़ती है . गरीब आदमी बिना फिल्टर की रसोई में बैठकर लिख देता है 'आज घर में नमक रोटी ..पर दिल से खोटी नहीं' और पोस्ट पर भर भर के लाइक और कमेंट मिलता है . और साथ में पीछे–पीछे भर भर कर लक्ष्मी जी आने लगती हैं.

गरीबी में कंटेंट अपने आप बन जाता है .अमीर को रील बनाने के लिए पहाड़ों पर जाना पड़ता है . और गरीब आदमी छत पर चढ़कर घास ,भूसा , आसमान के फोटो डाल देता है. और लिख देता है 'सपना आसमान से बड़ा होने चाहिए' उसका ऐसा लिखना ! और लोगों के दिल में दया का दरिया उमड़ उमड़ कर बहने लगता है. और फ्री में सहानुभूति भर भर के मिलती है . और सोशल मीडिया पर इससे ज्यादा इंसान को क्या चाहिए. इतना उसे अमीर बनाने के लिए काफी होता है.

अमीर लोग यदि किसी दुख में हो और सोशल मीडिया पर रो भी रहे हो. तो लोगों को लगता है कि ड्रामा कर रहे हैं और कोई ध्यान नहीं देता है . लेकिन यदि गरीब अपने घर के खाली बर्तन दिखा दे . और कहे कि 'आज कुछ नहीं है खाने को मन भारी है तो दस लोग इनबॉक्स में मदद करने आ जाते हैं' यहां आप अपनी गरीबी को भी बेच सकते हैं. मेहनत करने की आपको कोई जरूरत नहीं है. आप बस अपने घर के खाली बर्तन और दो आंसू दिखा दीजिए . आपका घर भरने के लिए अनाज मिल जाएगा बर्तन भरने के लिए तो छोड़ ही दीजिए.

और ऊपर से गरीब होने पर सबसे बड़ा फायदा यह है कि ट्रेंड में रहने का कोई भी जरूरत नहीं होता है .अमीर लोग हर समय ट्रेंड –ट्रेंड करते रहते हैं.... कभी डांस चैलेंज, कभी कपल गोल्स, कभी विदेश यात्रा और गरीब आदमी का सिर्फ एक फ्रेंड होता है कि रिचार्ज खत्म होने वाला है. उसका इतना लिखना भी उसके कमेंट सेक्शन में क्रांति लेकर चला आता है .अमीर लोग तो कामकाज में व्यस्त रहते हैं और गरीब हर मुद्दे पर अपनी राय देकर देश चलाता है.

अब गरीब होना उतना भी बुरा नहीं रहा बस उसका ढंग से इस्तेमाल करना आपको आना चाहिए. याद रखिए अमीर लोग फॉलोअर्स खरीदते हैं और गरीब फॉलोअर्स यहां पर मुफ्त में पाते हैं. तो आप भी अपनी गरीबी की कहानी सोशल मीडिया पर लिख डालिए. और भर भर कर लाइक कमेंट और फॉलोअर्स पा लीजिए. अमीर के पास उम्मीद होता है. और गरीब के पास उन उम्मीदों को बेचने का जुगाड़ होता है.

कविताएं

मैया मुझको ज्ञान दिला दो

प्रोफेसर (डॉ.) प्रज्ञा मिश्रा
कवयित्री, चित्रकूट (म.प्र.)

मैया मुझको ज्ञान दिला दो
विद्या का सम्मान दिला दो।
अच्छी–अच्छी बात सिखा दो
सत्कृत्यों से प्रीति बढ़ा दो।
मैया मुझको ज्ञान दिला दो
विद्या का सम्मान दिला दो।
मैया तू है भोली–भाली
भक्तों की करती रखवाली।
भक्तों को भगवान् दिला दो।।
मैया मुझको ज्ञान दिला दो
विद्या का सम्मान दिला दो।
मैया तुम हो धवल धारणी
श्वेताम्बरी वीणा वरदायनीं।
मैया मुझको ज्ञान दिला दो
विद्या का सम्मान दिला दो।
मैया मैल मिटा दो मेरा
मेरे मधुवन को महका दो।
ममता मानवता सिखला दो।।
मैया मुझको ज्ञान दिला दो।

राम का है आसरा

राम साकार है, राम संसार है।
राम व्यवहार है, राम ही आधार है।।
राम में लगाओ मन, राम ने बनाया तन।
राम ही कृपा करें तो, जन आधार है।।
राम साकार है, राम संसार है।
राम व्यवहार है, राम ही आधार है।।
राम मेरी शक्ति है, राम मेरी भक्ति है।
राम दरबार है, तो घर–घर प्यार है।।
राम साकार है, राम संसार है।
राम व्यवहार है, राम ही आधार है।।
राम से उम्मीद है, राम का है आसरा।
सिया–राम प्रीति है, तो नहीं कोई दूसरा।।
राम साकार है, राम संसार है।
राम व्यवहार है, राम ही आधार है।।

सियाराम आत्मा,
वही परमात्मा।

नौका हो केवट की,
तरे संतात्मा।।
राम साकार है, राम
संसार है।
राम व्यवहार है, राम
ही आधार है।।

राम सुजस, सुख मूल

अजय मिश्रा

नहीं कोई दीन हितु राम सों
आरतिहरन,प्रनतपाल राम
भजै मन सतत जो
पावे विश्राम सो
मागनो निवारन करें
अभिमतदातार राम
अनाथ के,तात मात गुरु
सखा बन्धू, ईश्वर राम
राम–चरण अनुराग बढ़ा ले
सर्व समर्थ राम कृपा पा ले
त्रिविध ताप हरें राम
ईश्वर, परम उदार राम
मन के सब ,मल नासै
रामपद , प्रेमहीन मन
कबहूं सुख न पावै
राम भजन बिन, त्रिभुवन में
जीव ठौर न पावै
राम सुजस, सुख मूल
तुलसीदास,सार सब बताबै

मौन की गूंज

शांतनु बेहरे

सबने सुनी है चीत्कार यहां
पर मौन किसी ने सुना नहीं
शब्दों के इस जाल में
सच को किसने बुना नहीं
भाग रहे थे बाहर हम
चकाचौंध को पाने में

भूल गए हैं खुद को हम
दुनिया को आजमाने में
शोर की इस महफिल में
मौन का कोई मोल नहीं
मन के एहसासों का
शब्दों से कोई तोल नहीं

हसरतों की भीड़ ने
सुकून हमसे छीन लिया
महलों की चाहतो ने
अपनों से ही निम्न किया।
दौड़ते रहे उम्र भर
उस ख्वाब को सजाने में

बैठा था वो जिधर एक शांत से
गलियारे में
अब लौट के देखा
खाली है हाथ खाली हैं हम
वक्त ने चुपके से कहा
क्या कुछ लाए थे संग अपने

लघुकथा

अविनाश अग्निहोत्री

नींव के पत्थर

साहब ओ साहब जरा बच्चे के उत्तर सुन लीजिए देखिए ये पेपर में सब ठीक से तो कर आया न.

परीक्षा खत्म होने के बाद परीक्षा हाल के बाहर एक शिक्षक से गुहार लगाता रामखिलावन.

अपने बच्चे को घर से बड़ी दूर शहर में सेंटर पर परीक्षा दिलाने आया है.

पूरे समय बाहर धूप में खड़े अपने बच्चे के लिए भगवान से प्रार्थना करते पसीने में तर बतर हो चुका है.

शिक्षक के पेपर हाथ में लेते ही बच्चा उत्तर बोलने लगा.

सारे प्रश्न सुनने के बाद जब शिक्षक ने एक पल रामखिलावन की ओर देखा, बच्चे के पेपर अच्छा कर आने के एहसास से जैसे उसकी सारी थकान उतर गई थी.

वो शिक्षक को दोनों हाथ जोड़कर धन्यवाद दे रहा था और शिक्षक सोच रहा है कि जब ये बच्चा पढ़ लिखकर बड़े ओहदे पर होगा तब इसकी तो खूब तारीफ होगी पर इस पिता के संघर्ष को कौन याद रखेगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी